JETIR.ORG ISSN: 2349-5162 | ESTD Year : 2014 | Monthly Issue
JOURNAL OF EMERGING TECHNOLOGIES AND INNOVATIVE RESEARCH (JETIR)
An International Scholarly Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

लोकदेव गाँधी : प्रतिबंधित साहित्य के सन्दर्भ

ललित कुमार

सहायक आचार्य,

हिंदी विभाग,

राजकीय महाविद्यालय कुम्भलगढ़, राजस्थान

Abstract: यह शोध–पत्र महात्मा गांधी की उस लोकदेवता–सदृश छवि का विश्लेषण करता है, जो ब्रिटिश भारत के ग्रामीण जनमानस में रची–बसी थी और जिसका व्यापक प्रभाव प्रतिबंधित हिंदी साहित्य, विशेषतः लोक साहित्य में स्पष्ट रूप से परिलक्षित होता है। औपनिवेशिक सत्ता द्वारा जिस साहित्य को प्रतिबंधित किया गया, वह वास्तव में जनता की सामाजिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक चेतना का प्रामाणिक दस्तावेज है। इस शोध में उपन्यास 'मैला आँचल' के प्रसंगों तथा विभिन्न प्रतिबंधित गीतों, कविताओं एवं लोकधुनों के माध्यम से यह स्थापित किया गया है कि गांधी जनमानस में केवल एक राजनेता नहीं, बल्कि एक अवतारी पुरुष, चमत्कारी शक्ति–स्रोत और राष्ट्रीय मुक्ति के देवता के रूप में प्रतिष्ठित थे।

चरखा, खादी, सत्याग्रह और असहयोग जैसे गांधीवादी प्रतीककृलोक के लिए आर्थिक या राजनीतिक उपकरण नहीं, अपितु धर्म–सम्मत संघर्ष के शस्त्र थे। कृष्ण और गांधी की साम्यताएँ, चरखे और सुदर्शन चक्र की तुलनाएँ, तथा गाँव–गाँव में गूंजते गांधी के गीत इस बात के प्रमाण हैं कि गांधी लोकमानस में श्रद्धा, आस्था और प्रेरणा का अक्षय स्रोत बन चुके थे। यह शोध इस ऐतिहासिक–सांस्कृतिक यथार्थ को रेखांकित करता है कि जिन साहित्यिक अभिव्यक्तियों को साम्राज्यवादी सत्ता ने दबा दिया, वही उस युग की वास्तविक जनचेतना को स्वर प्रदान करती हैं।

Keywords: गांधी, लोकदेवता, प्रतिबंधित साहित्य, लोक साहित्य, चरखा, खादी, सत्याग्रह, अवतारी पुरुष, मैला आँचल, गांधी की छवि, ग्रामीण जनमानस, स्वतंत्रता आंदोलन, ब्रिटिश भारत, गांधीवादी प्रतीक, लोकगीत, औपनिवेशिक दमन, लोकचेतना, हिंदी साहित्य, राष्ट्रीय चेतना।

'गांधीजी तो अवतारी पुरुख हैं'[1] – यह केवल हिंदी के सुप्रसिद्ध आंचलिक उपन्यास की एक पंक्ति मात्र नहीं है, बल्कि गांधी के समय के भारत के जन–मानस की भावना का भी परिचायक है। स्वतंत्रता–संघर्ष के काल में भारत के ग्रामीण जन–समुदाय में यह भावना प्रबल रूप से विद्यमान थी कि गांधी कोई सिद्ध महात्मा हैं, जो भारत की शोषित जनता को गुलामी से मुक्त कराने एवं न्याय दिलाने के लिए अवतरित हुए हैं। 'मैला आँचल' को चूँकि आलोचकों ने उस काल के भारत के आंचलिक परिवेश का प्रामाणिक प्रतिनिधि स्वीकार किया है, अतः इस उपन्यास के कुछ संदर्भों के माध्यम से प्रतिबंधित हिंदी साहित्य के आलोक में तत्कालीन भारत के ग्रामीण परिवेश में गांधी की छवि को समझने का प्रयास यहाँ किया गया है।

रामधारी सिंह 'दिनकर' की एक अत्यंत महत्वपूर्ण पुस्तक है – 'लोकदेव नेहरू'। दिनकर जी ने इस पुस्तक का नाम विनोबा भावे से प्रेरणा लेकर रखा था। विनोबा भावे ने नेहरू को श्रद्धांजलि देते हुए उन्हें 'लोकदेव' कहा था – "पंडितजी सचमुच ही भारतीय जनता के देवता थे।" ठीक यही बात गांधी के लिए और भी अधिक प्रामाणिकता के साथ कही जा सकती है। गांधी सचमुच जीवित रहते हुए ही भारतीय जनता के बीच देवता के रूप में पूजित हो गए थे। भारत के जन–मानस का एक बडा भाग गांधी को केवल प्रतीकात्मक रूप में ही नहीं, अपितु यथार्थ रूप में भी 'अवतारी पुरुख' मानता था।

एक दुबला–पतला, लाठी के सहारे चलने वाला वृद्ध व्यक्ति यदि मशीनगनों से सुसज्जित पुलिस और सैन्यबल वाले इतने विशाल अंग्रेजी शासन को अपने निर्णयों को पलटने हेतु विवश कर देता हो, और वह अवतारी न हो – यह कल्पना करना भी असंभव है। निश्चित ही गांधी महात्मा के पास कोई ऐसी सिद्धि रही होगी, जिसके माध्यम से वे ऐसे अद्भुत कार्य कर पाते थे और समस्त देश उनके गुणों का गायन करता था। विशेष रूप से भारत के ग्रामीण अंचलों में इस प्रकार की भावना को 'मैला आँचल' में अत्यंत प्रामाणिक रूप में चित्रित किया गया है।

'बालदेव' इस उपन्यास का एक प्रमुख पात्र है, जो गांधी का परम भक्त है। गाँव में अपनी बात को प्रमाणिक ठहराने के लिए वह 'महतमाजी कहिन हैं' पदबंध का निरंतर प्रयोग करता है, क्योंकि वह गाँव भर में गांधी के शिष्य के रूप में ख्यात है और गांधीजी की प्रतिष्ठा अत्यंत उच्च है –

".....मगर महतमा जी के परताप से, भारथमाता के परताप से, मन में सेवा भाव जन्म हुआ और हम सेवक का बाना ले लिए । आप लोगों का तो मालूम है जयमंगल बाबू जो मेनिस्टर हुए हैं, अपना दस्तखत भी नहीं जानते हैं । बहुत छोटी जात का है । वह भी गरीब आदमी थे, मूरख थे । मगर मन में सेवा भाव था और महतमा जी उसको मेनिस्टर चुन लिए । महतमा जी कहिन हैं– बैसनब जन तो उसे कहते हैं जो पीर पराई जानता है रे ।"[2]

इसी उपन्यास में एक प्रसंग में, जब तारावती जी नमक कानून तोडने के लिए पटना से चन्नपटी आश्रम में आती हैं, तब बावनदास को उनकी सेवा में नियुक्त किया जाता है। एक बार दोपहर में, जब बावनदास तारावती को आराम करते हुए कु–दृ ष्टि से देख लेता है, तो वह गहन पछतावे और अपराध–बोध से ग्रस्त हो जाता है। वह गांधी की तस्वीर की ओर देखकर प्रायश्चित करता है – "बाबा, छिमा! छिमा! दो घडे पानी! दुहाई बापू!"[3] इसके साथ ही, प्रायश्चितस्वरूप, बावनदास सात दिनों का उपवास करता है।

"दरअसल तत्कालीन समय में महात्मा गाँधी ग्रामीण भारत के अधिकांश हिस्से में एक किवंदती की तरह ख्यात हो रहे थे । लोगों को लगता था कि अपने द्वारा किए अपराध के लिए यदि गाँधी से क्षमा माँग लिया जाए तो पाप से मुक्त हुआ जा सकता है क्योंकि 'गांधीजी तो अवतारी पुरुख है' ।"[4]

इस प्रकार के अनेक प्रसंग इस उपन्यास में बिखरे पडे हैं। इनसे यह स्पष्ट होता है कि भारत के तत्कालीन ग्रामीण क्षेत्रों में गांधी की छवि एक अवतारी पुरुष अथवा लोकदेवता के रूप में स्थापित थी। ठीक यही तथ्य तत्कालीन ब्रिटिश सरकार द्वारा प्रतिबंधित साहित्य के माध्यम से भी स्पष्ट होता है।

एक साम्राज्यवादी सत्ता द्वारा प्रतिबंधित साहित्य को सही अर्थों में 'जनता की चेतना का साहित्य' कहा जा सकता है। भारत में ब्रिटिश शासन के कालखंड में साहित्य पर व्यापक रूप से प्रतिबंध लगाए गए, क्योंकि तत्कालीन सरकार यह नहीं चाहती थी कि देश की जनता में सामाजिक, राजनीतिक अथवा आर्थिक चेतना का विकास हो। यदि ऐसा होता, तो अंग्रेजी शासन के अस्तित्व पर संकट और भी गहरा हो जाता। अतः उस समय की हुकूमत ने ऐसी समस्त अभिव्यक्तियों पर प्रतिबंध आरोपित कर दिया, जिनसे किसी भी प्रकार की राजनीतिक चेतना के विकसित होने की संभावना हो।

इन दमनात्मक कार्यवाहियों के अंतर्गत उन समस्त साहित्यिक कृतियों को भी निशाना बनाया गया, जिनमें प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से गांधी अथवा गांधीवादी राजनीतिक उपकरणों – जैसे असहयोग, सत्याग्रह, खादी, चरखा आदि – का केवल उल्लेख मात्र भी किया गया हो।

प्रतिबंधित साहित्य में गांधी के संदर्भ बार–बार आते हैं, बल्कि यह कहना अधिक उपयुक्त होगा कि शायद ही ऐसी कोई प्रतिबंधित कविता या कहानी हो, जिसमें एक भी बार गांधी अथवा उनके राजनीतिक औजारों का उल्लेख न हुआ हो।

यद्यपि लगभग सभी भारतीय भाषाओं के साहित्य पर प्रतिबंध लगाए गए, तथापि हिंदी और उत्तर भारतीय बोलियों का साहित्य इस क्षेत्र में अग्रणी रहा। खडी बोली हिंदी, हिन्दुस्तानी और उर्दू के प्रतिबंधित साहित्य तथा उत्तर भारतीय बोलियों – जैसे ब्रज, अवधी, भोजपुरी आदि – के प्रतिबंधित साहित्य में यह अंतर दृष्टिगोचर होता है कि जहाँ 'भाषाओं' का साहित्य अपेक्षाकृ त परिष्कृत और साहित्यिक मानकों पर खरा उतरने वाला होता है, वहीं 'बोलियों' का साहित्य लोक की सहज भावना को बिना किसी कृत्रिमता के स्वाभाविक रूप से प्रतिबिंबित करता है।

इनमें से उत्तरार्द्ध को आज की शब्दावली में 'लोक साहित्य' की संज्ञा दी जा सकती है। 'प्रतिबंधित लोक साहित्य' लगभग सभी लोक छंदों एवं गायन शैलियों में विद्यमान है, जिनमें आल्हा, रसिया, कजरी, फाग और दादरा प्रमुख हैं। प्रतिबंधित लोक साहित्य का अधिकांश भाग गेय है – स्पष्टतः इसलिए, क्योंकि लोक में साहित्य के प्रचार–प्रसार का माध्यम 'कागज' नहीं, अपितु 'कंठ' होता था। इसका एक दुष्परिणाम यह भी हुआ कि ऐसा बहुलांश साहित्य आज हमारे लिए उपलब्ध नहीं है, क्योंकि वह कभी कागज पर मुद्रित ही नहीं हुआ।

सही अर्थों में 'जनसमूह के हृदय के विकास'[5] को प्रतिबिंबित करने वाले ऐसे साहित्य से तत्कालीन जनमानस के विषय में अनेक रोचक एवं महत्वपूर्ण निष्कर्ष प्राप्त होते हैं। यद्यपि न तो इतिहासकारों ने इस प्रकार के प्रतिबंधित साहित्य को एक ऐतिहासिक स्रोत के रूप में स्वीकार करने की आवश्यकता समझी है, और न ही साहित्य के आलोचकों ने इसे साहित्य की श्रेणी में मान्यता देना आवश्यक समझा है, तथापि इससे प्रतिबंधित साहित्य की महत्ता किसी भी प्रकार से कम नहीं हो जाती।

साहित्य के इतिहास में 'वादों' के खाँचों में बाँधकर जो साहित्य पढाया–पढा जाता रहा है, वह वस्तुतः उस युग की जनचेतना को प्रतिबिंबित करने वाला साहित्य नहीं है। इसके विपरीत, उसी कालखंड में उत्पन्न वह साहित्य, जिस पर ब्रिटिश सरकार ने प्रतिबंध लगाए, वास्तविक जनचेतना की अभिव्यक्ति का प्रतिनिधि है अतः प्रामाणिक साहित्य उसी को माना जाना चाहिए।

उदाहरणार्थ, प्रथम प्रकार का – अर्थात् 'साहित्यिक मानकों पर खरा उतरने वाला साहित्य' – यह कभी नहीं बता पाएगा कि उस काल के जनमानस में गांधी 'लोकदेव' के रूप में प्रतिष्ठित थे। यह जानकारी उस साहित्य से प्राप्त होती है जो भले ही पारंपरिक साहित्यिक मानदंडों पर न खरा उतरता हो, किन्तु जनमानस को यथावत् प्रतिबिंबित करने में पूर्णतः सक्षम है।

प्रतिबंधित साहित्य में गांधी अनेक रूपों में प्रस्तुत होते हैं – कभी महात्मा के रूप में, कभी चरखे वाले बाबा के रूप में, कभी जेल को धाम बनाने वाले मोहन के रूप में, तो कभी गांधी महाराज के रूप में। इससे यह तथ्य स्पष्ट होता है कि गांधी तत्कालीन जनमानस के लिए केवल विश्वास के पात्र ही नहीं थे, अपितु आस्था और श्रद्धा के केन्द्र भी थे।

जन–विश्वास में गांधी एक सर्वव्यापी अवतारी पुरुष के रूप में विद्यमान थे, जिन्होंने अंग्रेजों के अत्याचारों से पीडित भारत की जनता का उद्धार किया, और जिनके कारण भारतमाता स्वयं को धन्य अनुभव करती थी –

"विदित 'बली' है विश्व नाम धाम काम जाको, जौन आज सर्व व्याप्त और सर्वोपरि है ।
तौन को कहौ हौं कका परिचौ सुनाऊं जाको, भारत सुमाता धन्य होती अंक भरि है ।।"[6]

गाँधी के कई रूपों को बताते हुए एक स्थान पर कवि ने गाँधी की महिमा को इस प्रकार वर्णित किया है –

"एक गाँधी यूनियन सर कीन्हो सरकार, एक गाँधी भृत्य–शाही शासन डिगायो है ।
एक गाँधी भारतीय हिम्मत बढ़ाय 'बली', एक गाँधी सर्वश्रेष्ठ नर पद पायो है ।।
एक गाँधी पशु–बल दलित कियो है विश्व, एक गाँधी आत्मबल जग को दिखायो है ।
तैतीस करोड़ बनौ गाँधी आज भारत पै, साइमन सप्तक की लगे नहीं मायो है ।।"[7]

गांधी के गौरव में ऐसे अनेक काव्य एवं गीत रचे गए और प्रतिबंधित किए गए, जिनमें गांधी के 'चमत्कारों' का वर्णन किया गया है। गांधी के केवल गर्जन से ही देश के दुःख–दर्द दूर हो जाते हैं और सरकार कांपने लगती है। गांधीजी में वह शक्ति है कि वे बिना तोप–तलवार उठाए ही ब्रिटिश शासन को हिला देते हैं। यहाँ तक कि ब्यूरोक्रेसी की स्थिति यह हो जाती है कि वह गांधी के नाम मात्र से काँपने लगती है –

"गाँधी के गराजे देश दैन्य दुःख दूर भाजे, झाँपे सरकार सारी कांपे बरतानिया ।"[8]

"गांधीजी गजब कीन्हों लोकप सों रन लीन्हो, तोप तलवार बिना तखत हिलाय दीन्हो ।"[9]

"गाँधी महराज तेरे नाम को ख्याल होत, खलक हलत ब्यूरो–क्रेसी बिललात हैं ।"[10]

गांधी के प्रताप की तो बात ही निराली है! उनकी वाणी इतनी शक्तिशाली है कि उसके प्रभाव से निर्बल भी सबल बन उठता है। यदि किसी एक का दमन किया जाए, तो गांधी के प्रतापवश दस अन्य सामने आ खडे होते हैं और यदि उन दस का दमन किया जाए, तो उनके स्थान पर दस हजार उठ खडे होते हैं। इसी प्रकार, यदि किसी एक को जेल में डाला जाए, तो उसके स्थान पर दस व्यक्ति और जेल जाने के लिए प्रस्तुत हो जाते हैं, और यदि उन दस को भी बंदी बनाया जाए, तो दस हजार और तैयार हो जाते हैं। ऐसा व्यापक और अद्‌भुत प्रभाव था गांधी का –

"गाँधी महराज तेरे विमल वचन वस, निबल सबल ह्वेगो सत्य शक्ति पाय के ।"[11]

"एक के दले ते दस सामुहे दिखाई देत,अदस के दले ते दस सहस जुड़ावते ।

एक किन्हें बंद दस बंद होत बन्देखाने, अदस के समाने दस सहस समावते ।

एक किन्हें कत्ल दस कत्ल को तैयार होत, दस किन्हें कत्ल सर शत सहस झुकावते ।

हार थकी भृत्यशाही दल के दरारे देख, दिल के फरारे 'बली' गाँधी के प्रभावते ।।"[12]

जिस प्रकार देवताओं के अपने–अपने शस्त्र होते हैं, उसी प्रकार लोक में चरखे को गांधी का शस्त्र माना जाता था। ग्रामीण जनों की समझ में चरखा चलाने के पीछे कोई आर्थिक सिद्धांत निहित नहीं था – "गाँव के लोग अर्थशास्त्र के साधारण सिद्धांत भी नहीं जानते। 'सप्लाई और डिमांड' के गोरखधंधे में वे अपना दिमाग नहीं खपाते।"[13]

चूँकि चरखा गांधी का शस्त्र था, इसलिए उसे चलाना आवश्यक समझा जाता था। गांधी के इस शस्त्र की तुलना भगवान कृष्ण के सुदर्शन चक्र से करते हुए इसकी शक्ति का वर्णन इस प्रकार किया जाता था कि यह अंग्रेजों की मशीनगनों को भी परास्त कर सकता है।

चरखा इतना चमत्कारी माना जाता था कि उसके चलाने मात्र से देश के समस्त कष्ट स्वतः ही दूर हो जाएँगे – यही स्वराज्य दिलाएगा, यही खिलाफत का झगडा समाप्त करेगा, यही जालिमों को रुलाएगा और यही शत्रुओं को परास्त करेगा। लोकमानस में यह भावना गहराई से व्याप्त थी कि जितना अधिक चरखा चलाया जाएगा, उतनी ही शीघ्रता से 'सुराज' प्राप्त होगा –

"चलाओ चरखा तजो शोक वह दिन आएगा, स्वराज्य दौड़कर कदमों में सिर नवाएगा ।"[14]

"गाँधी बाबा ने भारत जगाय दिया है, हमे चरखे का मंतर बताय दिया है ।"[15]

"हमें ये स्वराज्य दिलाएगा चरखा, खिलाफत का झगडा मिटाएगा चरखा ।"[16]

"चलाएँगे गर मशीनगन वे, इधर चलेगा हमारा चर्खा, इसी एक चर्खे से देखो नशा हम उनका उतार देंगे।"[17]

चरखे में इतनी ताकत है कि उसे चलाकर घर बैठे–बैठे स्वराज्य प्राप्त किया जा सकता है, इसके लिए कहीं दूर जाने की आवश्यकता नहीं –

"चलाओ चरखा तो घर बैठे होमरूल मिले, स्वराज्य लेने कहीं दूर न जाना होगा ।"[18]

इसी भांति खद्दर की महिमा में कई गीत बने जो वर्षों तक लोक के कंठों में गुंजायमान रहे –

"वतन की गुलामी छोड़ाएगा खद्दर, गरीबों की इज्जत बचाएगा खद्दर ।

कहे गाँधी बाबा जो पहिनोगे खद्दर, तो शीघ्र स्वराज्य दिलवाएगा खद्दर ।"[19]

'गाँधी गुणगान' कविता में कवि ने गाँधी को विष्णु का अवतार बताते हुए लिखा है कि भारत की धरती को बंधन से मुक्त करने के लिए गाँधी 'मुक्तधाम' से भूमि पर अवतरित हुए हैं –

"अवतार थे दया के दयानंद बुद्ध जिन, उनकी जगह पे हरि ने उतारा है गाँधी ।

बंधन विमुक्त करने को भारत मही के राम, तज मुक्तधाम भूमि पधारा है गाँधी ।।"[20]

प्रतिबंधित गीतों में बार–बार गांधी की तुलना भगवान कृष्ण से की गई है। कृष्ण और गांधी की अनेक साम्यताएँ – जैसे दोनों का नाम 'मोहन', दोनों का शस्त्र 'चक्र', और दोनों का जेल से गहरा संबंध – इन सभी को दृष्टिगत रखते हुए लोक में यह विश्वास दृढ़ हो गया था कि गांधी वास्तव में कोई देवता ही हैं –

"दिया जो मंत्र 'मोहन' ने, उसे अब हम न भूलेंगे। दिलाएगा स्वराज हमको हमारा बस यही चर्खा।"[21]

"इधर महात्मा गाँधी ने भी लिया चक्र अब तान, असहयोग का शंख बजाकर छेड़ दिया संग्राम ।"[22]

"ये हुए पैदा हमारे पूर्वज जिसमें कभी, जाते है उस जेल का कोना बसाने के लिए ।"[23]

लोकगान की 'दादरा' शैली में रचित यह गीत विशेष रूप से उल्लेखनीय है, जिसमें कृष्ण और गांधी की साम्यता को दर्शाते हुए यह बताया गया है कि जिस प्रकार कृष्ण की बांसुरी की धुन सुनकर समस्त जनमानस मोहित हो जाता था, उसी प्रकार अब गांधी ने 'नए धुन की अनोखी बंसी बजाई' है, जिससे देश की दशा ही परिवर्तित हो गई है –

"देखो बाजी मुरलिया मोहन की, क्या खूब गाँधी ने बजाई है बांसुरी ।

इस बांसुरी–विचित्र की छा घोर सी गई, भारत के कोने–कोने में घर–घर खबर भई,

बजी बंसी अनोखी नए धुन की ।

सुनते ही घोर देश की हालत सुधर गई, अपने दिलों की भीरुता जाने किधर गई

दहलाई जिससे छाती है दुश्मन की ।"[24]

गांधी के साथ भारत के जनसमुदाय का जुडाव इतना गहरा हो चुका था कि विवाह–गीतों, प्रेम–गीतों, वियोग–गीतों तथा पर्व–त्यौहारों के गीतों में भी गांधी का उल्लेख अनिवार्यतः मिल ही जाता था। 'प्यारो वियोग' नामक एक गीत में एक महिला अपनी 'बिगडी हुई ननद' के संदर्भ में कहती है कि गांधी बाबा ही हैं जो उसे सुधार सकते हैं। यदि गांधी बाबा एक बार उसे सुधार दें, तो वह 'सुदेशी' का 'परचार' करने लगेगी–

"भारत के एक बाबा गाँधी जी, सुधारे ये ननदिया मोरी रे ।

करेला सुदेसी परचार ये ननदिया मोरी रे । ।"[25]

"गांधी जी के संदर्भ से कई बार खबरें बदले रूप में पहुँचती थी और कई बार अफवाहों के साथ । कई बार तो गांधी जी भगवान के अवतार के रूप में याद किए जाते थे ।"[26] 'आजादी का जौहर यानी नमक का पुजारी' नामक प्रतिबंधित पुस्तक में गाँधी को 'औतार' बताते कवि ने लिखा है कि यहाँ हद से भी बढ़कर अत्याचार हुए इसलिए गाँधी ने अवतार लिया है –

"संसार में भगवान का औतार हो गया, बस जालिमों का समझो अब संघार हो गया ।

हद से भी बढ़कर यहाँ पर अत्याचार हो गया, तब ही तो खुद भगवन का औतार हो गया ।।"[27]

"भगवन अपने भक्त के हृदय में सो रहे है, भारत के जख्मी सिने को आंसू से धो रहे है ।

पापों की किश्ती भर–भर के जल में डुबो रहे है, सब माल बिदेशी को समुदर में ढो रहे है ।।"[28]

प्रतिबंधित साहित्य में ऐसे अनेक संदर्भ हैं जिनसे सिद्ध होता है कि भारत में गाँधी की छवि 'लोकदेव' की भांति थी । लोक में मानना था कि गाँधी भारत को कष्टों से मुक्ति दिलवाने के लिए ही अवतरित हुए है । "देशभर में गांधीजी के भाषणों का प्रभाव व्याप्त था । लोग विचार के साथ–साथ व्यवहार में भी गांधीमय हो उठे थे । उनकी वेशभूषा व खानपान भी गाँधीमाय हो उठा था, वे सभी विदेशी वस्त्रों का त्याग कर खादी वस्त्र धारण करते, साथ ही मांस को त्यागकर शाकाहारी बन गए थे । इस वातावरण को निर्मित करने में प्रतिबंधित लोक साहित्य का बड़ा हाथ था ।"[29]

निष्कर्षतः, महात्मा गांधी न केवल एक राजनीतिक नेता थे, अपितु भारतीय जनमानस के लिए एक 'लोकदेव', एक 'अवतारी पुरुष' के रूप में प्रतिष्ठित हो चुके थे। प्रतिबंधित साहित्य, विशेषतः लोकगीतों, गेय छंदों और ग्रामीण आख्यानों में गांधी की छवि किसी दैवत्व से कम नहीं रही। चरखा, खादी, असहयोग, सत्याग्रह – इन सब प्रतीकों को लोक ने गांधी के शस्त्रों के रूप में आत्मसात किया और इन्हें जन–आस्था का केंद्र बना दिया। कृष्ण के सुदर्शन चक्र की भाँति चरखा गांधी का चमत्कारी चक्र बन गया, जिससे स्वराज्य की प्राप्ति संभव मानी गई।

गाँधी का नाम विवाह गीतों से लेकर पर्व–त्योहारों तक की लोकधुनों में रच–बस गया था। यह सब केवल भावात्मक श्रद्धा नहीं थी, बल्कि एक प्रेरक सामाजिक–सांस्कृतिक चेतना भी थी जो भारत की स्वतंत्रता के संघर्ष में निर्णायक भूमिका निभा

रही थी। इस चेतना का प्रतिबिंब तथाकथित 'साहित्यिक' कृतियों में नहीं, बल्कि उन रचनाओं में अधिक है जिन्हें औपनिवेशिक सत्ता ने प्रतिबंधित कर दिया था। अतः यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि प्रतिबंधित साहित्य वास्तविक लोकचेतना का प्रामाणिक दस्तावेज है, और गांधी उसमें एक आस्था, संघर्ष एवं मुक्ति के प्रतीक रूप में उपस्थित हैं।

संदर्भ –

[1] मैला आँचल. फणीश्वरनाथ रेणु. दिल्लीरू राजकमल प्रकाशन, 2015. पृ. 42.
[2] मैला आँचल. फणीश्वरनाथ रेणु. दिल्लीरू राजकमल प्रकाशन, 2015. पृ. 29–30.
[3] वही, पृ. 133.
[4] मैला आँचल में राजनीति की बारादरी. अमरेन्द्र कुमार शर्मा. समालोचना, 2020.
< https://samalochan.blogspot.com/2020/07/blog-post_19.html?m=1>
[5] 'साहित्य जनसमूह के हृदय का विकास है', बालकृष्ण भट्ट.
[6] 'महात्मा मोहनदास करमचंद गाँधी', गाँधी गौरव. विनीत 'बली', संपा. रीवाः श्रीलाल महाबली सिंह, भार्गव प्रेस प्रयाग, 1930. एन.ए.आई.394.
[7] 'प्रोत्साहन', गाँधी गौरव. विनीत 'बली', संपा. रीवाः श्रीलाल महाबली सिंह, भार्गव प्रेस प्रयाग, 1930. एन.ए.आई. 394.
[8] 'गाँधी गौरव', गाँधी गौरव. विनीत 'बली', संपा. रीवाः श्रीलाल महाबली सिंह, भार्गव प्रेस इलाहाबाद, 1930. एन.ए.आई.394.
[9] 'गाँधी गौरव', गाँधी गौरव. विनीत 'बली', संपा. रीवाः श्रीलाल महाबली सिंह, भार्गव प्रेस इलाहाबाद, 1930. एन.ए.आई.394.
[10] वही.
[11] वही.
[12] 'गाँधी गौरव', गाँधी गौरव. विनीत 'बली', संपा. रीवाः श्रीलाल महाबली सिंह, भार्गव प्रेस इलाहाबाद, 1930. एन.ए.आई.394.
[13] मैला आँचल. फणीश्वरनाथ रेणु. दिल्लीः राजकमल प्रकाशन, 2015. पृष्ठ 177.
[14] 'गजल दादरा (चर्खा)', गाँधी की धूम अथवा स्वदेशी झंडा. प्यारेलाल वैश्य, संग्रा. शाहजहापुरः प्यारेलाल वैश्य, शिंघल प्रिंटिंग वर्क्स, 1931.
[15] 'गजल दादरा (चर्खा)', गाँधी की धूम अथवा स्वदेशी झंडा. प्यारेलाल वैश्य, संग्रा. शाहजहापुरः प्यारेलाल वैश्य, शिंघल प्रिंटिंग वर्क्स, 1931.
[16] चर्खा से स्वराज, गाँधी की धूम अथवा स्वदेशी झंडा. प्यारेलाल वैश्य, संग्रा. शाहजहापुरः प्यारेलाल वैश्य, शिंघल प्रिंटिंग वर्क्स, 1931. एन.ए.आई.406.
[17] 'भारत की पुकार', गाँधी की धूम अथवा स्वदेशी झंडा. प्यारेलाल वैश्य, संग्रा. शाहजहापुः प्यारेलाल वैश्य, शिंघल प्रिंटिंग वर्क्स, 1931. एन.ए.आई.406.
[18] गाँधी विजय अर्थात् आजाद भारत. विश्वनाथ शर्मा, संग्रा. बाराबंकीः देशबन्धु प्रेस, 1930. एन.ए.आई. 406. पृ. 11.
[19] 'खद्दर महिमा', अटल राज की कुंजी अर्थात् महात्माजी की पुकार. प्रयागः सरजू लाल, रामा प्रेस, 1931. एन.ए.आई.251.
[20] 'गाँधी गुणगान', गाँधी का तीर. राम कवि. अलीगढः पं रामप्रसाद गौड़, रामेश्वर प्रेस, 1931. एन.ए.आई.403.
[21] 'चरखा', गाँधी विजय अर्थात् आजाद भारत. विश्वनाथ शर्मा, संग्रा. बाराबंकीः देशबन्धु प्रेस, 1930. एन.ए.आई. 409.
[22] 'मची है भारत में घमसान', महात्मा गाँधी की स्वदेशी होली. 'विनोद'. लखनऊः हिंदी पुस्तक भंडार, एंग्लो अरेबिक प्रेस, 1922. एन.ए.आई.238.
[23] 'गजल', स्वराज्य की बंशी. ज्ञानसिंह वर्मा. अलीगढः सीताराम बुकसेलर, जगदीश प्रेस, 1922. एन.ए.आई.811–813.
[24] 'दादरा', स्वराज्य की बंशी. ज्ञानसिंह वर्मा. अलीगढः सीताराम बुकसेलर, जगदीश प्रेस, 1922. एन.ए.आई.811–813.
[25] 'प्यारोवियोग', विजय सुंदरी. रामलगन राय. मुज्जफरपुरः बिहार बन्धु प्रेस, 1924. एन.ए.आई.898.
[26] 'मैला आँचल में राजनीति की बारादरी'. अमरेन्द्र कुमार शर्मा. समालोचना, 2020.
[27] आजादी का जौहर यानी नमक का पुजारी. हरिशंकर. देहरादूनः तिलक पुस्तकालय, 1930. एन.ए.आई. 198 .
[28] आजादी का जौहर यानी नमक का पुजारी. हरिशंकर. देहरादूनः तिलक पुस्तकालय, 1930. एन.ए.आई.198. पृ.3.
[29] ब्रिटिश सरकार द्वारा प्रतिबंधित साहित्य में गाँधी. राकेश पाण्डेय, संपा. नई दिल्लीः राष्ट्रीय अभिलेखागार, डायमंड बुक्स, 2021. पृ.7.